



बच्चों में स्टंटिंग पर प्रशिक्षण मॉड्यूल



स्टंटिंग (नाटापन)

नाटापन क्या है?

एक नाटा बच्चा वह है जिसकी लंबाई/ऊँचाई उसकी उम्र तथा लिंग के अनुसार मानक लंबाई की तुलना में कम होती है। नाटापन का मुख्य कारण है लम्बे समय से शरीर को आवश्यकतानुसार कम आहार का मिलना या बार-बार संक्रमण से ग्रसित होते रहना। यह लम्बे समय से वृद्धि न होने का सूचक है। जब दीर्घ अवधि तक बच्चे कुपोषण के अन्य प्रकारों से ग्रस्त रहते हैं तो नाटापन (स्टंटिंग) की स्थिति उत्पन्न होती है। किसी व्यक्ति के नाटे कद का रह जाना यह बताता है कि उस व्यक्ति की अपने शुरुआती जीवन में अच्छे से स्वास्थ्य एवं पोषण देखभाल नहीं हुई है।

विधि : समूह में चर्चा प्रतिभागियों को चित्र के माध्यम से दो एक समान आयु के बच्चों में लम्बाई के अंतर को दिखायें। प्रतिभागियों को ये समझायें कि WHO द्वारा विश्व के सभी क्षेत्रों के लिए लम्बे अनुसन्धान के बाद आयु के अनुसार लम्बाई /ऊँचाई के मानक तय किये गये हैं। और इसी अनुसार बच्चों में सही लम्बाई/ऊँचाई का आंकलन किया जाता है।

स्टंटिंग (नाटापन)

नाटापन क्या है ?

एक नाटा (स्टंटेड) बच्चा वह है जिसकी लंबाई/ऊंचाई उसकी उम्र तथा लिंग के अनुसार मानक लंबाई की तुलना में कम होती है।

नाटापन लम्बे समय से वृद्धि न होने का सूचक है



स्टंटिंग (नाटापन) का पता कैसे चलता है

वैज्ञानिक तौर पर सभी बच्चों में एक समान वृद्धि करने की क्षमता होती है तथा समान आयु के दो बच्चों को एक साथ खड़ा करने पर दोनों की ऊँचाई समान होनी चाहिए। अगर समान आयु पर दो बच्चों की समान ऊँचाई या लम्बाई नहीं है तो समझना चाहिए कि बच्चों की पोषण देखभाल में कमी रह गयी है।

WHO वृद्धि मानकों के अनुसार लम्बाई / ऊँचाई की तुलना करने पर सही नाटेपन का स्तर का पता चलता है।

नाटेपन से बच्चे को निकालना बहुत कठिन होता है। विश्व स्तर पर हुए अध्ययनों से पता चलता है कि बचपन में लम्बाई का वयस्क अवस्था की लम्बाई से सीधा संबंध है। बचपन में जितना ज़्यादा नाटापन होता है उतना ही वह बच्चा का वयस्क होने पर नाटापन रह जाता है।

बच्चों में बढ़ी हुई लम्बाई कभी घटती नहीं है लेकिन शारीरिक वृद्धि होने के एक निश्चित समय बाद अगर सही पोषण देखभाल न होने के कारण वृद्धि कम हुई है तो आगे जीवन में उसकी भरपाई नहीं हो सकती है।

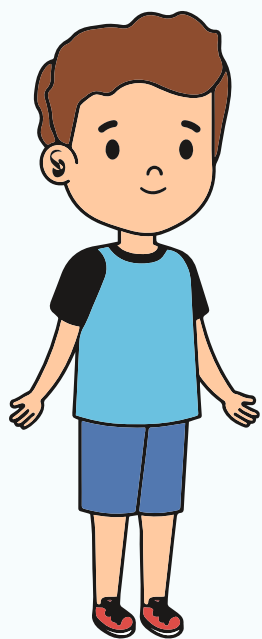
विधि

समूह में चर्चा

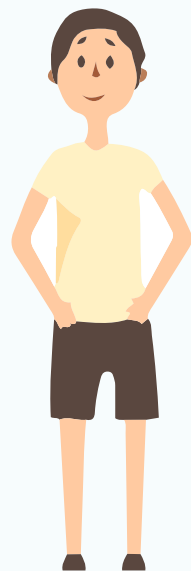
प्रतिभागियों से चर्चा करें कि हम कैसे नाटेपन का शिकार बच्चों का पता लगा सकते हैं।

स्टंटिंग (नाटापन) का पता कैसे चलता है

WHO वृद्धि मानक के आधार पर आयु के अनुसार लम्बाई/ऊँचाई की तुलना करके नाटापन (स्टंटिंग) की पहचान होती है



सामान्य



दुबला



नाटा



नाटा एवं दुबला

नाटापन (स्टंटिंग) की स्थिति कैसे मापा जाता है?

नाटापन की सही स्थिति को मापने के लिए आंगनवाड़ी केन्द्रों पर लम्बाई / ऊँचाई की माप लेने के लिए मापक उपकरण (इन्फ़ैन्टोमीटर, स्टेडियोमीटर, इन्फ़ेंट वज़न मशीन और माँ और बच्चे की वज़न मशीन) प्रदान की गयी हैं। इन उपकरणों की सहायता से आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री द्वारा बच्चों की माप लेकर WHO की आयु के अनुसार लम्बाई / ऊँचाई की वृद्धि मानक सारणी के आधार पर स्टंटिंग से सम्बंधित कुपोषण की स्थिति का आंकलन किया जाता है।

विधि : समूह में चर्चा प्रतिभागियों से चर्चा करें कि हम पहले मॉड्यूल में मानवमिति उपकरणों का उपयोग कर लम्बाई / ऊँचाई की माप करना सीख चुके हैं। और आगे स्टंटिंग के कारणों और प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

नाटापन (स्टंटिंग) की स्थिति कैसे मापा जाता है?

आंगनवाड़ी केन्द्रों पर आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री द्वारा इन्फैन्टोमीटर व् स्टैडियोमीटर की सहायता से स्टंटिंग की पहचान की जाती है।



पाँच साल तक के शिशुओं की लम्बाई कितनी होनी चाहिए? (से.मी.)				
उम्र (माह)	लड़के		लड़कियाँ	
	इससे कम तो नाटापन	आदर्श लम्बाई	इससे कम तो नाटापन	आदर्श लम्बाई
0	46.1	49.9	45.4	49.1
3	57.3	61.4	55.6	59.8
6	63.3	67.6	61.2	65.7
9	67.5	72	65.3	70.1
12	71	75.7	68.9	74
15	74.1	79.1	72	77.5
18	76.9	82.3	74.9	80.7
21	79.4	85.1	77.5	83.7
24	81.7	87.8	80	86.4
27	83.1	89.6	81.5	88.3
30	85.1	91.9	83.6	90.7
33	86.9	94.1	85.6	92.9
36	88.7	96.1	87.4	95.1
39	90.3	98	89.2	97.1
42	91.9	99.9	90.9	99
45	93.5	101.6	92.5	100.9
48	94.9	103.3	94.1	102.7
51	96.4	105	95.6	104.5
54	97.8	106.7	97.1	106.2
57	99.3	108.3	98.5	107.6
60	100.7	110	99.9	109.4



WHO की आयु के अनुसार लम्बाई/ऊँचाई की वृद्धि मानक सारणी के आधार पर स्टंटिंग से सम्बंधित कुपोषण की स्थिति का आंकलन किया जाता है।

प्रदेश में नाटापन (स्टंटिंग) की स्थिति

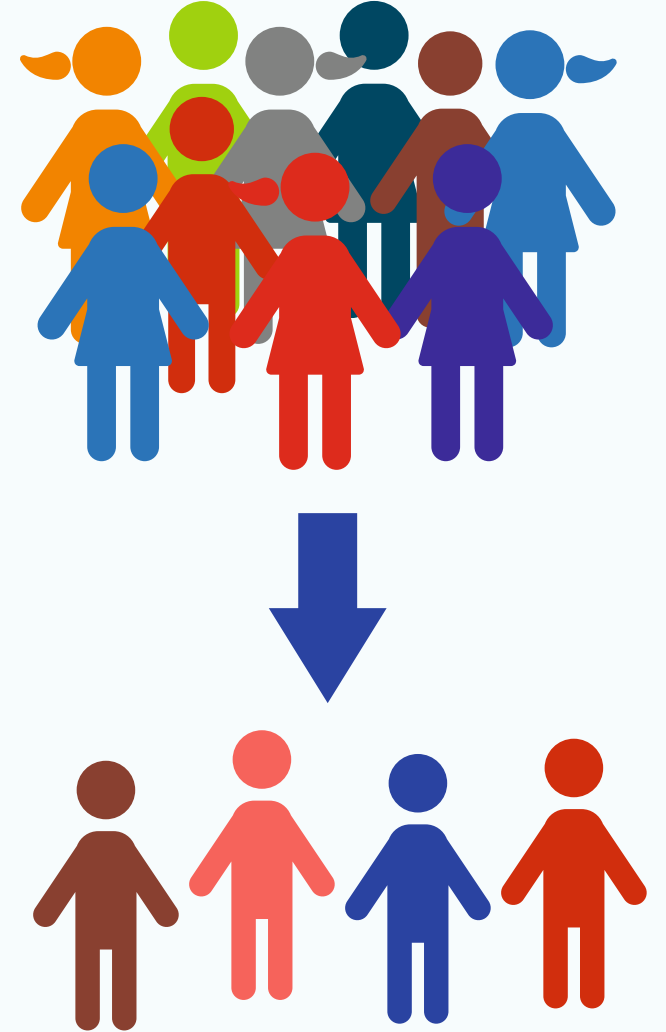
नाटेपन की सही स्थिति का आंकलन, भारत सरकार द्वारा 10 वर्ष के अंतराल पर नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे के द्वारा किया जाता जाता है। सबसे ताज़ा नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (**NFHS-5**) 2019-21 के अनुसार प्रदेश में **39.7%** बच्चे स्टंटिंग का शिकार हैं अर्थात हर 10 बच्चों में से 4 बच्चे अपने मानक कद से कम लम्बाई के (नाटेपन) के शिकार हैं। नाटापन पोषण व्यवहारों में सुधार से जुड़ा होने के कारण बहुत लम्बे समय में दूर होने वाली समस्या है। पिछले नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (**NFHS-4**) 2015-16 के अनुसार प्रदेश में **46.3%** बच्चे स्टंटेड थे। इस प्रकार इस अंतराल में नाटेपन में कुल **6.6%** की गिरावट आयी।

विधि : समूह में चर्चा प्रतिभागियों से चर्चा करें कि हम पहले मॉड्यूल में मानवमिति उपकरणों का उपयोग कर लम्बाई / ऊँचाई की माप करना सीख चुके हैं। और आगे स्टंटिंग के कारणों और प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

प्रदेश में नाटापन (स्टंटिंग) की स्थिति

हमारे प्रदेश में 39.7 प्रतिशत बच्चे स्टंटेड (नाटे) हैं

अर्थात हर 10 बच्चों में से 4 बच्चे अपने मानक कद से कम लम्बाई के (नाटेपन) के शिकार हैं



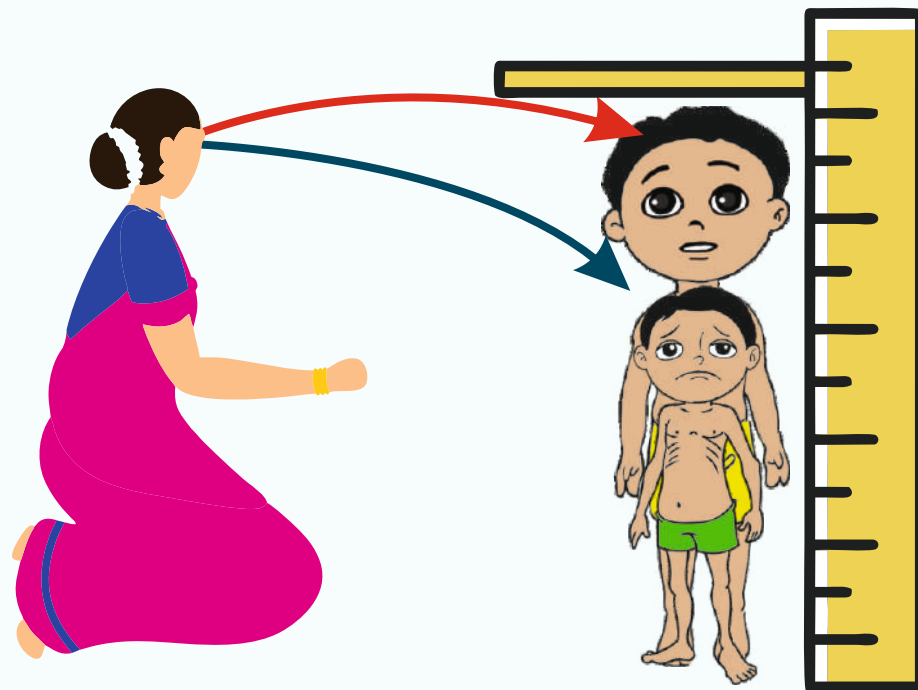
स्टंटिंग (नाटापन) होने के मुख्य कारण क्या हैं

- ① अपर्याप्त भोजन और गैर पौष्टिक भोजन की आदतें, स्वच्छता व्यवहारों को अपनाने में उदासीनता, और स्वच्छ वातावरण का अभाव, शैशवावस्था और प्रारंभिक बचपन के दिनों में देर से भोजन की शुरुआत, बच्चों के नाटे रह जाने के महत्वपूर्ण कारण हैं। इसके अलावा बच्चों के बार बार संक्रामक रोगों से ग्रस्त हो जाने और मां का पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति भी स्टंटिंग के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। एक कुपोषित मां के अविकसित बच्चे को जन्म देने की अधिक संभावना होती है।
- ② किसी भी बच्चे में स्टंटिंग या अपनी उम्र में मानक लम्बाई से कम लम्बा रह जाना इस तथ्य को पुष्ट करता है कि गर्भावस्था और बच्चे के जीवन के पहले दो वर्षों (1,000) दिन की अवधि के दौरान बच्चों की पोषण देखभाल सही से नहीं हो पायी है।
- ③ विशेषज्ञों के अनुसार बच्चे के पहले दो वर्ष के जीवनकाल में बच्चे की लम्बाई जितनी बढ़ती है बाकी के जीवन में उसकी दोगुनी ही हो पाती है। इसलिये पहले दो वर्षों में लम्बाई कम रह जाने की भरपाई जीवन भर असंभव होती है। इसलिए जीवन के पहले दो वर्षों को बच्चों के विकास के सुनहरे अवसरों की खिड़की कहा जाता है।

विधि : समूह में चर्चा प्रश्नोत्तर प्रतिभागियों से प्रश्न करें कि पिछले मॉड्यूल में सीखे कुपोषण की रोकथाम हेतु जीवन के 1000 दिनों के महत्त्व को स्टंटिंग से कैसे जोड़ेंगे ?

स्टंटिंग (नाटापन) होने के मुख्य कारण क्या हैं

- ⌚ अपर्याप्त भोजन
- ⌚ गैर पौष्टिक भोजन
- ⌚ माता के पोषण में कमी
- ⌚ स्वच्छ वातावरण का अभाव
- ⌚ स्वच्छता व्यवहारों के प्रति उदासीनता
- ⌚ जीवन के पहले 1,000 दिनों में पोषण देखभाल में कमी



स्टंटिंग (नाटापन) और स्वच्छता के बीच सम्बन्ध

वैश्विक स्तर पर किये अध्ययनों के अनुसार नाटेपन और स्वच्छता के बीच सम्बन्ध पाया गया है। बचपन में कुपोषण और नाटेपन के कारणों में स्वच्छता एवं साफ सफाई का न होना भी एक प्रमुख कारण है। स्वच्छता एवं साफ सफाई को दैनिक व्यवहार में न लाने के कारण दस्त एवं अन्य बीमारियाँ हो जाती हैं आस पास के वातावरण में स्वच्छता न होने के कारण जर्म्स एवं कीटाणु शरीर को प्रभावित करते हैं तथा मानव शरीर में बीमारियों का कारण बनते हैं तथा मानव शरीर बीमारियों के ग्रस्त होकर कुपोषण का शिकार हो जाता है।

स्वच्छता एवं साफ सफाई उपाय

- ① बच्चे के मल में कीटाणु बहुत अधिक संख्या में होते हैं। बच्चे के मल का निस्तारण कभी भी खुले में ना करें। इसको हमेशा शौच में फेंकें, अथवा मिट्टी से ढकें।
- ① मल के निस्तारण के पश्चात हाथ साबुन से अवश्य धोना चाहिए। शौचालय का उपयोग करने के बाद, मल त्याग करने के बाद हमेशा अपने हाथों को साबुन से धोइये।
- ① अपनी नाक साफ करने या छींकने के बाद अपने हाथों को साबुन से धोइये।
- ① पेयजल हेतु सुरक्षित जल का उपयोग करें तथा घर पर पानी व भोजन को ढक कर रखें।

विधि: समूह में चर्चा, वीडियो प्रदर्शन प्रतिभागियों से चर्चा करें कि स्वच्छता एवं साफ सफाई कि नियमों का पालन कर स्टंटिंग को कैसे रोका जा सकता है।

स्टंटिंग (नाटापन) और स्वच्छता के बीच सम्बन्ध

- ⦿ वैश्विक स्तर पर किये अध्ययनों के अनुसार नाटेपन और स्वच्छता के बीच सम्बन्ध पाया गया है।
- ⦿ बचपन में कुपोषण और नाटेपन के कारणों में स्वच्छता एवं साफ सफाई का न होना भी एक प्रमुख कारण है।
- ⦿ स्वच्छता एवं साफ सफाई को दैनिक व्यवहार में न लाने के कारण दस्त एवं अन्य बीमारियाँ हो जाती हैं
- ⦿ आस पास के वातावरण में स्वच्छता न होने के कारण जर्मस एवं कीटाणु शरीर को प्रभावित करते हैं तथा मानव शरीर में बिमारियों का कारण बनते हैं।
- ⦿ मानव शरीर बिमारियों के ग्रस्त होकर कुपोषण का शिकार हो जाता है।



स्टंटिंग (नाटापन) के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ते हैं?

- ① नाटेपन के स्थायी और अपरिवर्तनीय परिणाम होते हैं नाटापन व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है। स्टंटेड बच्चे को भविष्य में मधुमेह, मोटापे और उच्च रक्तचाप का बहुत ज्यादा खतरा होता है, अनुसंधान बताते हैं कि नाटेपन के शिकार बच्चों का दिमाग का पूरी तरह विकास नहीं हो पाने के कारण स्कूल में प्रदर्शन खराब होता है तथा वे शिक्षा में पिछड़ जाते जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों की आमदनी में कमी होने से आर्थिक प्रगति रुक जाती है। दरअसल, रिसर्च दर्शाती हैं कि नाटे बच्चे, प्रौढ़ होने पर सामान्य लम्बाई वाले व्यक्तियों की तुलना में 20 प्रतिशत कम कमाते हैं, जिसके राष्ट्र के विकास के भी प्रभावित होने की सम्भावना रहती है।
- ② ये माना जाता है कि एक स्टंटेड बच्चा भविष्य में स्टंटेड किशोरी बनेगी और माँ बनने की प्रक्रिया में छोटे कद की गर्भवती होगी। छोटे कद की महिला द्वारा गर्भ धारण गर्भावस्था के दौरान चिकित्सीय जटिलता में आता है। ऐसे केसों में जन्म के समय शिशु कम वज़न के होते हैं।

विधि: समूह में चर्चा और प्रदर्शन प्रतिभागियों को लाइफ साइकिल एप्रोच के माध्यम से नाटेपन के प्रभावों के बारे में समझायें।

स्टंटिंग (नाटापन) के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ते हैं?

बचपन में स्टंटिंग
के दीर्घकालिक
परिणाम

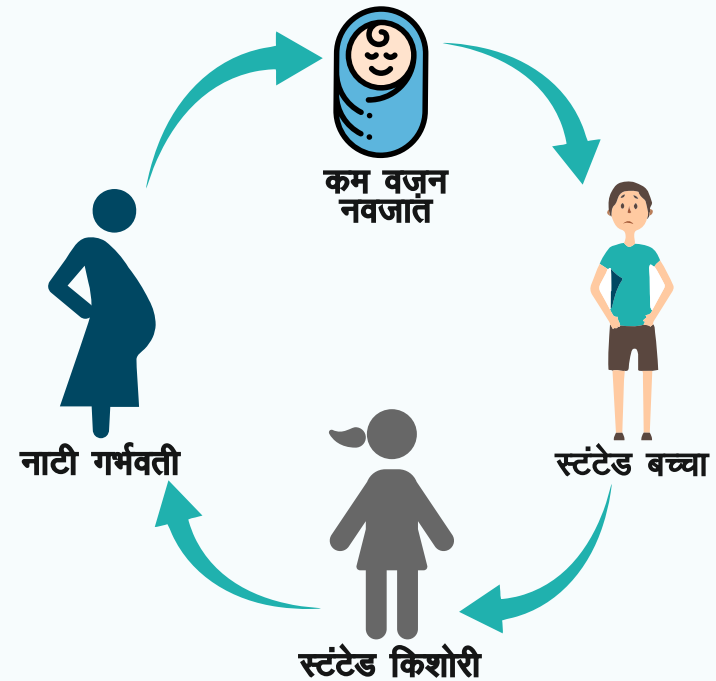
नाटा शरीर

नाटा दिमाग

नाटा जीवन

स्टंटिंग प्रभावित करता है

- ➔ स्वस्थ जीवन अस्तित्व को
- ➔ शारीरिक विकास को
- ➔ बौद्धिक विकास को
- ➔ स्कूल में शैक्षणिक उपलब्धि को
- ➔ धन कमाने की क्षमता को
- ➔ माँ बनने पर जन्म के समय वजन को



स्टंटिंग (नाटापन) को कैसे रोका जा सकता है

स्टंटिंग (नाटापन) को रोकने के लिए दो प्रकार हस्तक्षेपों को अपनाया जाना चाहिए।

1 – पोषण विशिष्ट हस्तक्षेप

2 – पोषण संवेदी हस्तक्षेप

पोषण विशिष्ट हस्तक्षेप वो गतिविधि हैं जो पोषण सुधार में प्रत्यक्ष रूप से भूमिका निभाते हैं। बाल्यावस्था (विशेषकर दो वर्ष से कम आयु में) में सही पोषण व्यवहारों को न अपनाने से स्टंटिंग की सम्भावना बढ़ जाती है। विभिन्न शोधों एवं विशेषज्ञों की राय में यदि दस प्रभावी पोषण हस्तक्षेपों का आच्छादन शत-प्रतिशत करा दिया जाय तो बच्चों में होने वाली काफी मृत्यु को रोका जा सकता है। इन हस्तक्षेपों को “कम व्यय परन्तु अधिक प्रभावशाली (स्वू बवेजीपही पउचंबज) भी माना गया है। पहले 1000 दिन में कुपोषण को दूर करने में इनका बहुत महत्व है। आंगनवाड़ी केंद्र स्तर पर इन हस्तक्षेपों के सफल क्रियान्वयन महत्वपूर्ण है।

- ① शीघ्र स्तनपान, 6 माह तक केवल स्तनपान,
- ① समय से ऊपरी आहार की शुरुआत
- ① आयु के साथ ऊपरी आहार की मात्रा बढ़ाना
- ① आयरन फोलिक एसिड और कैल्शियम का सम्पूरण
- ① जिंक और आयोडीन युक्त नमक का सेवन
- ① विटामिन ए का सम्पूरण
- ① डीवर्मिंग (कृमिनाशक गोलियों का सेवन)
- ① सैम / मैम बच्चों का प्रबंधन
- ① मातृ पोषण पर फोकस

विधि : समूह में चर्चा और प्रदर्शन प्रतिभागियों से चर्चा करें कि पोषण विशिष्ट हस्तक्षेपों के स्टंटिंग रोकने में कितने प्रभावी साबित हो सकते हैं।

स्टंटिंग (नाटापन) को कैसे रोका जा सकता है

स्टंटिंग को रोकने के प्रभावी उपाय

पोषण विशिष्ट हस्तक्षेप

- शीघ्र स्तनपान, 6 माह तक केवल स्तनपान,
- समय से ऊपरी आहार की शुरुआत
- आयु के साथ ऊपरी आहार की मात्रा बढ़ाना
- आयरन फोलिक एसिड और कैल्शियम का सम्पूरण
- जिंक और आयोडीन युक्त नमक का सेवन
- विटामिन ए का सम्पूरण
- डीवर्मिंग (कृमिनाशक गोलियों का सेवन)
- सैम / मैम बच्चों का प्रबंधन
- मातृ पोषण पर फोकस

स्टंटिंग (नाटापन) को कैसे रोका जा सकता है

पोषण संवेदी हस्तक्षेप

पोषण संवेदी हस्तक्षेप वो गतिविधि हैं जो समुदाय के पोषण पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डालती हैं। कुपोषण को केवल भोजन के माध्यम से ही दूर नहीं किया जा सकता है। इसके उन्मूलन के लिये दूसरे कारक भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। परिवारों की सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक स्थिति को सुधारना, सुरक्षित वातावरण, पर्यावरण, खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और महिलाओं का शशक्तिकरण भी महत्वपूर्ण कारक हैं। मुख्य पोषण संवेदी हस्तक्षेप निम्न प्रकार हैं।

- ⦿ प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल (ECD)
- ⦿ पोषण के प्रति जागरूकता
- ⦿ शिक्षा
- ⦿ स्वच्छता एवं साफ़ सफाई
- ⦿ अच्छी आमदनी के साधन
- ⦿ सुरक्षित पर्यावरण
- ⦿ कृषि एवं पोषण वाटिकाओं को बढ़ावा
- ⦿ महिला शशक्तिकरण

विधि : समूह में चर्चा और प्रदर्शन प्रतिभागियों से पोषण संवेदी हस्तक्षेपों की महत्ता पर प्रकाश डालें

स्टंटिंग (नाटापन) को कैसे रोका जा सकता है

स्टंटिंग को रोकने के प्रभावी उपाय

पोषण विशिष्ट हस्तक्षेप

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल (ECD)
- पोषण के प्रति जागरूकता
- शिक्षा
- स्वच्छता एवं साफ़ सफाई
- अच्छी आमदनी के साधन
- सुरक्षित पर्यावरण
- कृषि एवं पोषण वाटिकाओं को बढ़ावा
- महिला शशक्तिकरण

जीवन के पहले सुनहरे 1000 दिन

पोषण विशिष्ट एवं पोषण संवेदी हस्तक्षेप को लागू करने का सबसे उचित अवसर

कुपोषण का अधिकतम प्रभाव गर्भ में पल रहे भ्रूण पर तथा जीवन के पहले दो वर्षों में पड़ता है। इसके बाद प्रयास करने पर भी कुपोषण को सही करना आसान नहीं होता है। गर्भधारण के (270 दिन) से लेकर जीवन के पहले दो साल (730 दिन) तक की अवधि अर्थात् जीवन के पहले 1000 दिन पोषण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के कारण सुनहरा अवसर प्रदान करते हैं।

इसीलिए जीवन के पहले 1000 दिनों को पोषण के अवसरों की सुनहरी खिड़की (Window of Opportunity) में बच्चे की लम्बाई सबसे अधिक बढ़ती है और मानसिक विकास भी सबसे ज़्यादा होता है। इसीलिए ये आवश्यक हो जाता है कि इस समय में बच्चों के पोषण और लालन पालन पर विशेष ध्यान दिया जाये। यदि इस समय हस्तक्षेप नहीं किया गया तो यह बच्चे अपने वयस्क जीवन में अपूर्णीय क्षति का शिकार हो सकते हैं और उनके आने वाली पीढ़ियां भी प्रभावित हो सकती हैं।

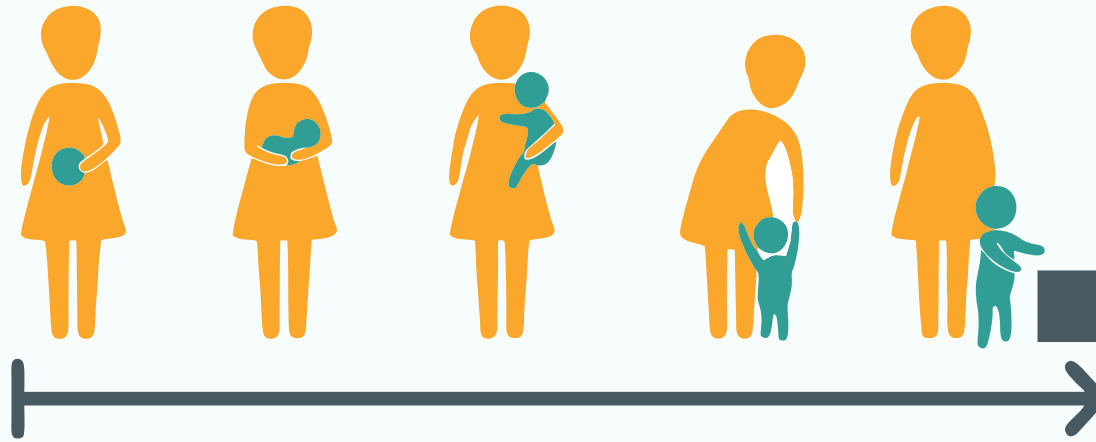
विधि : समूह में चर्चा और प्रदर्शन प्रतिभागियों से पोषण संवेदी हस्तक्षेपों की महत्ता पर प्रकाश डालें

जीवन के पहले सुनहरे 1000 दिन

स्टंटिंग को रोकने के लिए जीवन के पहले 1000 दिनों की भूमिका

पोषण विशिष्ट एवं पोषण संवेदी हस्तक्षेप को लागू करने का सबसे उचित अवसर

स्टंटिंग को रोकने के लिए अवसरों की सुनहरी खिड़की



एच.सी.एल समुदाय, ग्रामीण भारत के उत्थान के लिए एच.सी.एल फाउंडेशन की प्रतिबद्धता है। 2015 में स्थापित 'समुदाय' परियोजना राज्य सरकार, स्थानीय समुदायों, गैर सरकारी संगठनों, बौद्धिक संस्थानों और संबद्ध भागीदारों के साथ साझेदारी में ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास हेतु कार्य कर रही है। वर्तमान में 'समुदाय' परियोजना के अंतर्गत हरदोई जनपद के विभिन्न विकास खंडों में अपने स्वास्थ्य, आजीविका, कृषि, शिक्षा, पेयजल एवं स्वच्छता, पंचायती राज, सौर ऊर्जा आदि के माध्यम से सामुदायिक विकास संबंधी कार्यों को किया जा रहा है। स्वास्थ्य कार्यक्रमों के अंतर्गत संचल स्वास्थ्य सेवाओं, प्रसव केंद्रों, आदर्श ग्राम स्वास्थ्य पोषण एवं स्वच्छता दिवसों का आयोजन, टेलीमेडिसिन, स्वास्थ्य सेवाओं के संवर्धीकरण, जागरूकता कार्यक्रमों, किशोरी स्वास्थ्य, आदर्श आगनवाड़ी केन्द्रों की स्थापना, पोषण शिविरों एवं क्षय रोग कार्यक्रमों का संचालन स्वास्थ्य विभाग एवं ग्राम पंचायतों के साथ किया जा रहा है। पोषण कार्यक्रमों के अंतर्गत पोषण शिविरों का आयोजन किया जाता है जिसमें अतिकुपोषित बच्चों को गृह आधारित हस्तक्षेपों के माध्यम से सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। अपने अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम में आगनवाड़ी केन्द्रों के उच्चीकरण पर कार्य किया जा रहा है। इसके अंतर्गत सेवाओं एवं सुविधाओं को बाल मित्रवत एवं अनुकूल बनाते हुए ICDS कार्यक्रमों द्वारा दी जा रही 6 अनिवार्य सेवाओं को गुणवत्तापूर्ण बनाना है। ये मॉड्यूल 'पोषण कार्यक्रम' के अंतर्गत विकसित किया गया है।

परिकल्पना, मार्गदर्शन एवं सहयोग

श्री योगेश कुमार, ऑपरेशन हेड, एचसीएल फाउंडेशन,
श्री जयशंकर राय, श्री फायक अल्वी, डॉ. सौरभ तिवारी,
डॉ. आयशा आलम, श्री शशिकांत शिवहरे (एचसीएल फाउंडेशन)
लेखन एवं सम्पादन

मुस्तफा कमाल, फ्रीलॉन्स पब्लिक हैल्थ कंसलटेंट, डायरेक्टर AHEAD इंडिया ट्रस्ट
द्वारा एचसीएल फाउंडेशन के लिए निर्मित